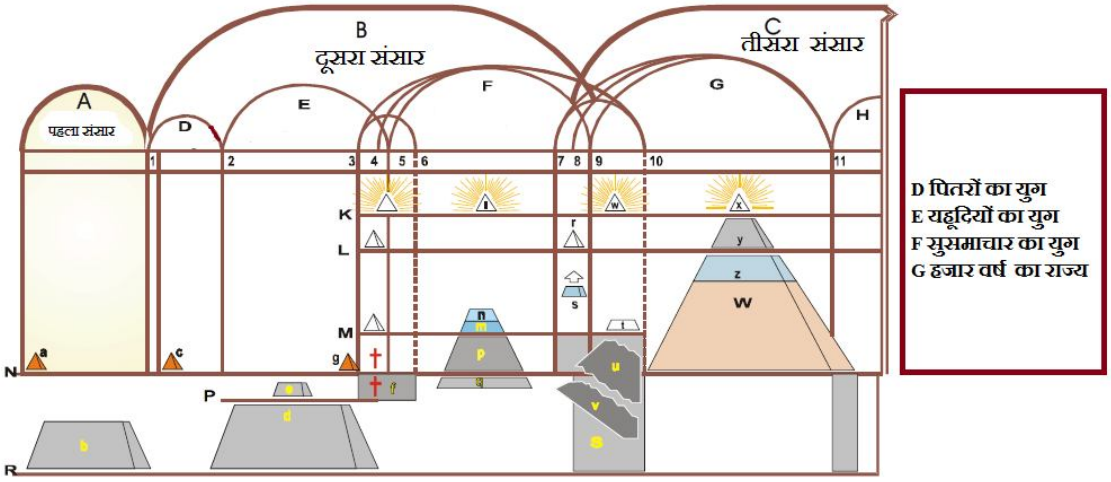

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

जब हम दुनिया को और दुनिया में हो रहे मामलों को देखते हैं तो कोई भी आश्चर्य करेगा कि **जीवन का उद्देश्य** क्या है?

क्या कोई योजना है? ये दुनिया किस ओर जा रही है?

हम जानते हैं कि **देशों** के पास योजनाएँ होती है --भारत के पास भी पंचवर्षीय योजनाएँ हैं!

बड़ी-बड़ी **कम्पनियाँ** भी **योजनाएँ** बनाती हैं, **परिवारों** में भी योजनाएँ बनती हैं और यहाँ तक कि लोगों के पास भी **खुद** के लिए योजना होती है और उनका जीवन उस योजना के अनुसार चलता है!

आज **हमारे** दिमाग में एक सवाल है -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

क्या परमेश्वर के पास भी कोई योजना है?

क्या यह जीवन किसी योजना के अनुसार चल रहा है?

बिल्कुल!!

हम परमेश्वर के बारे में एक वचन में पढ़ते हैं --

1 कुरिन्थियों 14:33 “क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है। जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।”

जी हाँ! परमेश्वर क्रमानुसार चलने वाले परमेश्वर हैं। उनके पास भी एक **योजना** है। परमेश्वर के द्वारा उनकी योजना को **"दर्शन"** कहा गया है।

इसके बारे में एक वचन में लिखा गया है...

<u>परमेश्वर की एक दिव्य योजना है पूरी मानवजाति के लिए।</u>

हबक्कूक 2:2 “यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं”

जी हाँ! यहाँ पर परमेश्वर हबक्कूक भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह बता रहे हैं कि

“दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे...”

यह भविष्यवाणी निश्चित समय पर 2000 वर्षों के बाद पूरी हुई और अब एक चार्ट हमारे सामने है जिसका सम्बन्ध **उस** "दर्शन" से है -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

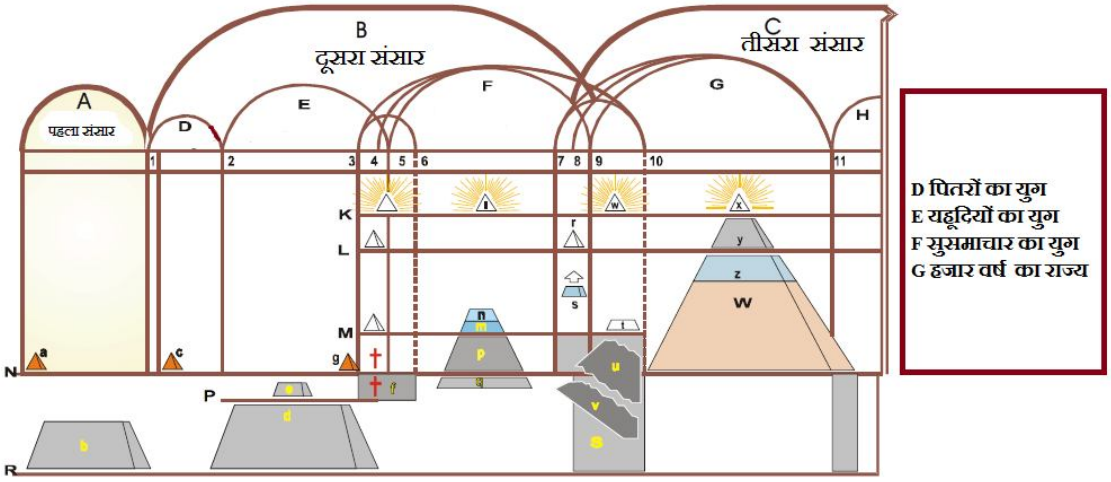

युगों की दिव्य योजना का चार्ट

परमेश्वर की यह **"दिव्य योजना"** बाईबल में उत्पति से प्रकाशितवाक्य तक **"थोड़ा यहाँ और थोड़ा वहां"** करके छिपी हुई है, लेकिन ठीक समय पर परमेश्वर ने इसे "पटियाओं" या चार्ट पर "**साफ़-साफ़**" लिखवाने का निर्णय लिया!!

लेकिन आप यह कह सकते हैं कि -

"मैं इस चार्ट को नहीं समझ सकता और मैंने पहले कभी भी इस चार्ट को नहीं देखा है"! यदि कोई, किसी आर्किटेक्ट के कार्यालय में चला जाए तो उसे वहां पर इमारतों के नक़्शे नज़र आयेंगें या **ब्लूएप्रिंट्स** नज़र आयेंगें, लेकिन जब तक वो खुद हमें इन नक्शों को न **समझाए**, हमें कुछ भी समझ में नहीं आएगा!

उसी तरह से परमेश्वर एक बड़े दिव्य आर्किटेक्ट हैं और ये चार्ट उनकी महान योजना है! इस चार्ट के बारे में परमेश्वर को ही हमें समझाना पड़ेगा।

इस चार्ट की पढाई धीरे-धीरे होगी और इसे पूरी तरह से समझने में लगभग 1 वर्ष लग जाएगा।

तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है

हमें धीरे-धीरे इस चार्ट के बहुत सारे गुणों को समझना होगा। हम **परमेश्वर की योजना** के बारे में गहराई से पढ़ेंगे।

आज हम इस चार्ट के तीन अक्षर **A, B और C** को देखते हैं। उन्हें चार्ट में इस तरह से दिखाया गया है -

A→ पहला संसार

B→ दूसरा संसार

C→ तीसरा संसार

आइये हम इन तीन **संसारों** के बारे में इन वचनों में पढ़ें --

2 पतरस 3: 5-7, 13 "वे तो जान बूझ कर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा से आकाश प्राचीन काल से वर्तमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है। इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूब कर नाश हो गया। पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे हैं, कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे"

13 → "पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी"॥

अब हम देखेंगे कि ये तीन "संसार" (जगत) क्या है?

यहाँ पर प्रेरित पतरस तीन जगत या संसार की बात कर रहें हैं।

"उस युग का जगत" जो बाढ़ के पहले था।

"वर्तमान काल का बुराई का संसार" और

"उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार" एक **"आनेवाला नया संसार"** जिसमे धार्मिकता वास करेगी!!

हर एक संसार में "**एक पृथ्वी और एक आकाश**" है।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

इन सब का क्या मतलब है?

आइये हम इन वचनों में पढ़ते हैं --

2 कुरिन्थियों 12:1-4 "यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिये ठीक नहीं तौभी करना पड़ता है; सो मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशों की चर्चा करूंगा। मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं, चौदह वर्ष हुए कि न जाने देह सहित, न जाने देह रहित, परमेश्वर जानता है, ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं न जाने देह सहित, न जाने देह रहित परमेश्वर ही जानता है। कि स्वर्ग लोक पर उठा लिया गया, और एसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं; और जिन का मुंह पर लाना मनुष्य को उचित नहीं"

यहाँ पर प्रेरित पौलुस "मसीह में एक मनुष्य" के बारे में बता रहें हैं, जिसे **"दर्शन"** में "तीसरे स्वर्ग" तक उठा लिया गया था और **"उसने ऐसी बातें सुनी जो कहने की नहीं"**।

ये "तीसरा स्वर्ग" क्या है?

"पहले" और **"दूसरे"** स्वर्ग कहाँ हैं?

इस बात को समझने के लिए पहले हम ये समझते हैं कि बाईबल में अंग्रेजी के शब्द **"Heaven"** या "स्वर्ग" या "आकाश" शब्द के तीन अलग-अलग मतलब हैं -

पहला स्वर्ग → परमेश्वर का घर--जहाँ वह रहते हैं।

सभोपदेशक 5:2 "बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं और तू पृथ्वी पर है; इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

दूसरा स्वर्ग →आकाशमण्डल और आकाश, जहाँ सूर्य, चन्द्रमा और तारागण है।

भजन संहिता 19:1 "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है"

तीसरा स्वर्ग → स्वर्ग का तीसरा मतलब बहुतों को कम ही मालूम है और **बाईबल में** ये मतलब का **उपयोग बहुत ज्यादा किया जाता है**। यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मतलब है जिसकी समझ हम अब प्राप्त करेंगें।

इस स्वर्ग का जिक्र जिस वचन में है, हम अब उसे पढ़ते हैं --

मत्ती 24:35 "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी"

जी हाँ, इस वचन में आकाश और पृथ्वी के "**टल जाने**" की बात कही जा रही है। [इस वचन में अंग्रेजी के Heaven यानि 'स्वर्ग' शब्द का अनुवाद हिन्दी में 'आकाश' किया किया गया है।]

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

अब हम ये समझेंगें कि इस वचन में कौन सा स्वर्ग (या आकाश) और कौन सी पृथ्वी टल जायेंगें? और क्यों?

क्या परमेश्वर के रहने का स्थान या आकाश जहाँ सूर्य, चाँद और तारागण दिखते हैं वे टल जायेंगें?

बिल्कुल भी नहीं!!

तब "कौन सा स्वर्ग और कौन सी पृथ्वी" टल जायेंगें?

इस वचन में "आकाश (स्वर्ग) और पृथ्वी" का क्या मतलब है?

क्या **साधारण** भाषा में हम जिसे आकाश और पृथ्वी कहते हैं, वे नष्ट होनेवाले हैं?

आइये इन प्रश्नों के उत्तर हम बाईबल में से इन वचनों के द्वारा ढूँढ़ते हैं --

सभोपदेशक 1:4 "एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है"

जी हाँ! इस वचन में यह स्पष्ट है कि "पृथ्वी सदा बनी रहेगी"। पृथ्वी **कभी भी नहीं टलेगी**।

आइए हम फिर से दूसरे वचन में भी देखें --

भजन संहिता 104:5 "तू ने पृथ्वी को उसकी नीव पर स्थिर किया है, ताकि वह कभी न डगमगाए"

जी हाँ! परमेश्वर ने पृथ्वी की नींव को स्थिर किया है ताकि वो **कभी न** डगमगाए!

जी हाँ! पृथ्वी को **कभी भी न** तो हटाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है!!

अब हम एक और वचन पढ़ते हैं --

यशायाह 45:18 "क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सुनसान रहने के

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रचा है। वही यों कहता है, मैं यहोवा हूं, मेरे सिवा दूसरा और कोई नहीं है"

इस वचन को पढ़कर हम ये भी जान जाते हैं कि न केवल पृथ्वी सदा बनी रहेगी बल्कि इसे सुनसान रहने के लिए नहीं बनाया गया है, परन्तु सदा बसने के लिए रचा है। हम इस सच्चाई, इस हकीकत को स्पष्ट रूप से वचनों में देखते हैं।

तब कौन सा "आकाश (स्वर्ग) और पृथ्वी" टल जायेंगे?

जैसा कि हमने बाईबल पढ़ने की चाबियाँ वाले पाठ में **2 तीमुथियुस 2:15** वचन में देखा था कि ये जरूरी है कि हम "**सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लायें**" यानी **ये परखें कि वचन में कौन सी शैली या भाषा का उपयोग किया गया है**।

2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्ज़ित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो"

यहाँ पर मत्ती 24:35 वचन में साधारण भाषा का उपयोग नहीं किया गया है बल्कि इशारे वाली भाषा का उपयोग किया गया है!

"स्वर्ग" (आकाश) का इशारे वाली भाषा में क्या मतलब है?

इसका उत्तर हम इस वचन में पढ़ते हैं--

इफिसियों 2:2 "जिन में तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है"

जी हाँ! इस वचन में **"आकाश के अधिकार के हाकिम"** का सम्बन्ध **शैतान** और उसके **आत्मिक अदृश्य शासन** से है जो वर्तमान समय में इस पृथ्वी पर चल रहा है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसलिए इशारे वाली भाषा में "स्वर्ग" का मतलब है धरती के मामलों पर अदृश्य आत्मिक शासन।

यह एक **महत्वपूर्ण मतलब है** --अंग्रेजी शब्द “Heaven” का या "स्वर्ग" का **तीसरा मतलब।**

अब हम देखते हैं कि इशारे वाली भाषा में "पृथ्वी" का क्या मतलब है?
हम उसका उत्तर इस वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह 24:1-3, 19,20 “सुनो, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने पर है, वह उसको उलटकर उसके रहने वालों को तितर बितर करेगा। और जैसी यजमान की वैसी याजक की; जैसी दास की वैसी स्वामी की; जैसी दासी की वैसी स्वामिनी की; जैसी लेने वाले की वैसी बेचने वाले की; जैसी उधार देने वाले की वैसी उधार लेने वाले की; जैसी ब्याज लेने वाले की वैसी ब्याज देने वाले की; सभों की एक ही दशा होगी। पृथ्वी शून्य और सत्यानाश हो जाएगी; क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है”
19,20 “वह मतवाले की तरह बहुत डगमगाएगी। और मचान की तरह डोलेगी; वह अपने पाप के बोझ से दब कर गिरेगी और फिर न उठेगी”

जी हाँ! यहाँ पर "पृथ्वी" **ग्रह** की बात नहीं हो रही है बल्कि पृथ्वी पर जो अदृश्य आत्मिक शासन चल रहा है उसके अन्दर **मनुष्य की व्यवस्था या संगठन** की बात हो रही है।

इसलिए "पृथ्वी" इशारे वाली भाषा में मनुष्य की पृथ्वी पर आँखों से दिखाई देने वाली जो व्यवस्थाएं हैं, उन्हें दर्शाती है।

ये व्यवस्था चार “तत्वों” या **भागों** से मिलकर बनी है -

1) **राजनैतिक या सरकारी व्यवस्था**

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2) **सामाजिक व्यवस्था**

3) **धार्मिक व्यवस्था**

4) **आर्थिक व्यवस्था**

ये **चारों** मिलकर "पृथ्वी" चिन्ह को बनाते हैं।

अभी के समय में, आदम के पाप में गिरने के समय से लेकर ये "स्वर्ग और पृथ्वी" **बुरे स्वर्गदूतों** और गिरे हुए बुरे मनुष्यों के नियंत्रण में है जो कि इन गिरे हुए स्वर्गदूतों का **माध्यम** है!
लेकिन शैतान के राज्य के ये "स्वर्ग" [आकाश] और "पृथ्वी" जाते रहेंगें और नए "स्वर्ग" [आकाश] और नई "पृथ्वी" इसके **बदले में** दिखेगें, जिसके बारे में हम स्पष्ट रूप से इस वचन में पढ़ते हैं -

प्रकाशितवाक्य 21:1 "फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा"

ये **नया** "आकाश" या "स्वर्ग" और **नई** "पृथ्वी" क्या है?
हम इनके बारे में इस वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह 65:17 "क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहली बातें (पुराना स्वर्ग और पृथ्वी) स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी"

जी हाँ! "स्वर्ग" या "आकाश" का मतलब है **नया "अदृश्य आत्मिक शासन"** पृथ्वी पर और नई "पृथ्वी" का मतलब है **"दिखाई देने वाला मनुष्य का शासन"**, वर्तमान **"बुरे संसार"** के **बाद** एक एक ऐसी दुनिया आनेवाली है " जिसमें धार्मिकता वास करेगी"।

वह नया "स्वर्ग" या "आकाश" और इसका **अदृश्य आत्मिक शासन** कैसा होगा? इसका उत्तर हम इस वचन में पढ़ते हैं --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

दानिय्येल 7:13-14 “मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बालने वाले सब उसके आधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा”

यहाँ पर हम देखते हैं कि **"मनुष्य के सन्तान सा कोई"** जिसे **"सदा तक अटल रहने वाली"** प्रभुता दी जाती है और पृथ्वी के लोगों के ऊपर राज्य करने का अधिकार दिया जाता है।
जी हाँ! वह **“दुनिया”** या “जगत” या “संसार”, **“मनुष्य के पुत्र” यीशु** के शासन में रहेगा --

और यही बात वास्तव में यीशु ने पिलातुस से कही थी कि–

यहून्ना 18:36 "...मेरा राज्य इस संसार का नहीं..." **(दूसरा संसार)** ।

जी हाँ! बहुत लोग इस बात को समझने में असफल हो गए और उन्होंने समझा कि यीशु **"किसी स्वर्ग के राज्य"** की बात कर रहे हैं!
लेकिन नहीं! यीशु यहाँ पर **तीसरे संसार** के **“आत्मिक राज्य”** की बात कर रहे थे जो कि पृथ्वी पर आनेवाला है या **"नए स्वर्ग"** की बात कर रहे थे।

और एक **नई** पृथ्वी भी होगी, इसकी **चार नई व्यवस्थाओं के साथ**!

एक नई सरकार या राजनैतिक व्यवस्था।

इसका विवरण हम इस वचन में पढ़ते हैं --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

मत्ती 8:11 "और मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे"

सब लोग इनके पास क्यों आएंगे?

क्योंकि... वे **मनुष्यों के प्रधान** होंगे, जैसा की हम इन वचनों में पढ़ते हैं --

भजन संहिता 45:16 "तेरे पितरों के स्थान पर तेरे पुत्र होंगे; जिन को तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा"

इन्हें **'पितरों'** के नाम से जाना जाता है।
इन विश्वासी लोगों का विवरण प्रेरित पौलुस ने **इब्रानियों की पुस्तक के 11 वें अध्याय** में विस्तार से लिखा है।

ये लोग यीशु के **"पूर्वज"** या **पितर** थे जब यीशु शरीर में आए थे।

ये सब लोग अभी भी मरे हुए हैं! ये सब लोग जब प्रभु यीशु शरीर में आए थे तब भी मरे हुए थे!!

1 कुरिन्थियों 15:22 ..."वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे"

1 कुरिन्थियों 15:22 वचन के अनुसार जब "मसीह में सब जिलाए जाएंगे" उस समय सारे पितर लोग **प्रभु यीशु मसीह के हाथों से** मरे हुए में से जी उठेंगें।

यहून्ना 11:25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।

उस समय प्रभु यीशु **"दूसरे आदम"** होंगें और ये पितर **उनके...** पुत्र होंगें।
जो इनाम उन्हें मिलेगा वो ये होगा कि वे पूरी पृथ्वी पर **हाक़िम** ठहराए जाएंगे।
वे परमेश्वर के राज्य में सभी देशों में आँखों से दिखाई देने वाले **मनुष्य** के रूप में राज्य करेंगें।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

कितनी अदभुत है परमेश्वर की यह योजना?

और ये लोग **वाकई में** कितने उपयुक्त हाक़िम होंगें उस महिमा वाले राज्य में, आँखों से दिखाई देनेवाले **शासक**!!

एक नई धार्मिक व्यवस्था

जैसा की हम वचन में पढ़ते हैं, **पूरी दुनिया में एक ही धर्म होगा** जिसमें पूरी दुनिया को एकमात्र **सच्चे परमेश्वर** का ज्ञान हो जायेगा -

जकर्याह 14:9 "तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस समय एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा"

जी हाँ! तब परमेश्वर के ज्ञान और उनकी आराधना को लेकर **कोई उलझन नहीं रहेगी**।

एक नई सामाजिक व्यवस्था

पूरी मानवजाति के सभी लोगों को उनके **हक़ और विशेषाधिकारों के मामले में बराबरी का स्थान मिलेगा** और **अमीर** ("पहाड़") और... **गरीब** ("तराई") लोगों के बीच में जो बड़ा अन्तर है वो गायब हो जाएगा। इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह 40:4 "हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊंचा नीचा है वह चौरस किया जाए"

इस वचन में पहाड़ 'अमीर' लोगों का चिन्ह है और तराई 'गरीब' लोगों का चिन्ह है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

एक नई आर्थिक व्यवस्था

तीसरे संसार में जो नई **आर्थिक** व्यवस्था होगी उसमें किसी को भी उसकी आधारभूत जरूरतों में जैसे कि भोजन, कपड़ा और छत में कोई कमी नहीं होगी।

जैसा कि हम

यशायाह 65:21 "वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे"

वचन में पढ़ते हैं -

जी हाँ, उस समय के लोग **अपने निज घरों** में बसेंगें,
और किसी को भी भाड़े के घरों में नहीं रहना पड़ेगा!
इसके साथ ही उनके परिश्रम का **फल** भी मीठा होगा!

वो समय अभी के समय से अलग होगा। अभी तो किसान क़र्ज़ में डूबे होते हैं और **बैंक या पैसे उधार देनेवालों के लिए** मजबूरन उन्हें अपने परिश्रम का फल दूसरों को देना पड़ता है!

जी हाँ! ये "तीसरा संसार" का कभी भी **अन्त** नहीं होगा, जैसा की हम एक वचन में पढ़ते हैं -

इफिसियों 3:21 "कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन"

इसलिए, **जगत के अन्त** का मतलब है एक निश्चित अवधी के युग और उसकी व्यवस्थाओं का **अन्त**।

अन्त में हम ये समझेंगे कि **2 कुरिन्थियों 12:2** वचन में जिस "तिसरे स्वर्ग" का जिक्र किया गया था वह क्या था?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2 कुरिन्थियों 12:2 “मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं, चौदह वर्ष हुए कि न जाने देह सहित, न जाने देह रहित, परमेश्वर जानता है, ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया”

"तिसरे स्वर्ग" का सम्बन्ध **“स्वर्ग” या तिसरे संसार के अदृश्य आत्मिक राज्य से है** -- **"तिसरा"** स्वर्ग (पहले संसार का “स्वर्ग” **"पहला स्वर्ग”** था और दूसरे संसार का “स्वर्ग” **"दूसरा स्वर्ग”** था)

-- प्रेरित पौलुस ने **परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी** पर देखा था इस **“दर्शन”** में! कितना महिमामय रहा होगा उनका दर्शन!!

आइये अब हम **पहले संसार के बारे** में विस्तार से **पढ़ें** -

पहला संसार

“पहला संसार” या फिर **"उस युग का जगत"**

2 पतरस 3:6 “इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूब कर नाश हो गया”

आदम की सृष्टि से लेकर उस **दिन** तक या जब बाढ़ **शुरू** हुई -**1656** सालों का समय।

(बाइबल कालक्रम और इतिहास के पाठ # 22 में समय की यह गणना **पूरी स्पष्टता से साबित** की जाएगी।)

चार्ट में **‘A’** अक्षर पहले संसार का समय है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

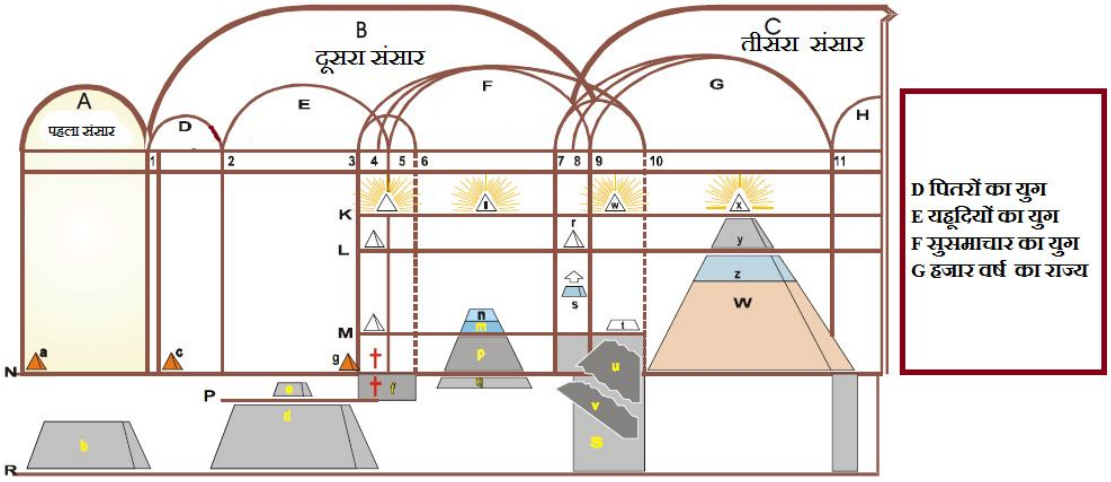

हम **पहले संसार** और इसके आत्मिक **अदृश्य** शासन के बारे में क्या पढ़ते हैं?

आइये हम इस वचन में पढ़ें -

इब्रानियों 2:5 "उस ने उस आने वाले जगत को जिस की चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के आधीन न किया"

इस वचन से हम ये समझते हैं कि पहले और दूसरे संसार पर **गिरे हुए बुरे स्वर्गदूतों** को शासन करने की **अनुमति** दी गई थी।

आइये अब हम पहले संसार के बारे में वचन देखें --

उत्पति 6:3 "और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है: उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी"

यह क्या है? क्या यह वचन मनुष्य की आयु की और संकेत कर रहा है?

हम देखते हैं कि मनुष्य की आयु पहले संसार में औसतन 850 वर्षों से भी ज्यादा रही है।

(उत्पत्ति के पांचवें अध्याय की वंशावली में देखें।)

यहाँ तक की बाढ़ के बाद दूसरे संसार में भी हम यही देखते और पढ़ते हैं --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उत्पति 11: 11,13,15 "...शेम पांच सौ वर्ष जीवित रहा; और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई॥ और शेलह के जन्म के पश्चात अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ और एबेर के जन्म के पश्चात शेलह चार सौ तीन वर्ष ..."॥

यह वचन में एक स्पष्ट प्रमाण है कि **दूसरे संसार** में भी मानवजाति की आयु के वर्ष 300 सालों से अधिक, बहुत पीढ़ियों तक होती थी!

☞ तब **उत्पत्ति 6:3 वचन सच में क्या** बता रहा है?

यह वचन मनुष्यों की **खुद की** आयु के बारे में **नहीं** बता रहा बल्कि बाढ़ आने तक पूरे मनुष्यों की आयु के **जितने वर्ष बाकी बचे थे** उसके बारे में एक **भविष्यवाणी** और **चेतावनी** थी!

पूरी मानवजाति के लिए पहले संसार में जितने "दिन" बचे थे वे थे "एक सौ बीस साल"।

☞ अब हम पहले संसार के बारे में दूसरी बात देखेंगे --

उत्पति 1:6 "फिर परमेश्वर ने कहा, जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए"

यह वचन **"जल के बीच में"** एक अन्तर को दिखाता है **जो कि "नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को" अलग करता है जिससे कि जल के दो भाग हो जाए**।

☞ इस वचन का क्या मतलब है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उत्पत्ति 1 : 6 ;
2 पतरस 3 : 5

पृथ्वी की बाहरी सतह के ऊपर जल के आवरण (कैनोपी) की परतदार गोल कडियाँ

यह वचन पृथ्वी के ऊपर **निलम्बित जल की परत** के आवरण (कैनोपी) का वर्णन कर रहा है, जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को सूर्य की **सीधी** धूप से बचाने के लिए बनाया था। पूरी पृथ्वी जल के इस आवरण से घिरी हुई थी!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यह एक बहुत बड़े और विशाल सुरक्षा की छतरी के जैसा था!!

इसके बारे में हम फिर से एक और वचन में पढ़ते हैं -

2 पतरस 3:5 "...पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है"

जी हाँ! बाढ़ के समय में इसी **जल का आवरण** था, जो की टूटा।

उत्पति 7:11 "...और आकाश के झरोखे खुल गए"

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और एक-एक परत करके जल का ये आवरण गिरने लगा और इनके एकाएक गिरने के कारण चालीस दिनों और चालीस रातों तक वर्षा हुई जिसने पूरी पृथ्वी को जलप्रलय से भर दिया! (**जल की ये परतें एक के ऊपर एक थी जैसे की एक प्लाईवुड के तख्ते में होती है।**)

उस दृश्य की कल्पना करें! और उस आवाज़ की कल्पना करें!!

अब हम पहले संसार के बारे में एक और बात देखते हैं --

उत्पति 2:17 "...क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा"

जिस दिन आदम ने वह फल खाया "उसी दिन" वह क्यों नहीं मरा?

हम पढ़ते हैं कि आदम **930** वर्षों तक जीवित रहा!

उत्पति 5:5 और आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की हुई तत्पश्चात वह मर गया॥

ऐसा कैसे हुआ?

कुछ ईसाइयों का यह मानना है कि आदम **"आत्मिक"** रूप से उसी दिन मर गया लेकिन शारीरिक रूप से बहुत बाद में मरा।

क्या यह सच है और वचन के अनुसार है? आइये हम देखते हैं ...

यहाँ पर हमें अवश्य यह महसूस करना चाहिए कि इस वचन (उत्पति 2:15,16→ हिन्दी बाईबल में उत्पति 2:15,16 वचन में "Lord God" का अनुवाद करते समय "प्रभु परमेश्वर" को "यहोवा परमेश्वर" लिखा गया है।) में **"उसी दिन"** का सम्बन्ध पृथ्वी पर के 24 घंटों के दिन से **नहीं** है बल्कि उस दिन की अवधी और अधिक है!!

क्योंकि उस वचन में "प्रभु परमेश्वर" बात कर रहे थे!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

"प्रभु परमेश्वर" कौन है?

ये प्रभु **यीशु** हैं, मनुष्य के रूप में जन्म लेने से **पहले** (जिनके द्वारा परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना की है।)

और हम प्रभु यीशु के "**एक दिन**" के बारे में क्या पढ़ते हैं --

2 पतरस 3:8 "... कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं"

हाँ! प्रभु यीशु के लिए एक दिन = हमारे 1000 साल या हमारे 365,000 दिन!

इसलिए पूरी मानवजाति में से **किसी ने भी** वह "एक दिन" जो की 1000 साल का होता है, पार नहीं किया है।

कोई मनुष्य जिसकी आयु सबसे लम्बी थी, वो है 969 वर्ष!

➡ उसका नाम **मतूशेलह** है (उत्पत्ती 5: 27)

उत्पति 5:27 "और मतूशेलह की कुल अवस्था नौ सौ उनहत्तर वर्ष की हुई तत्पश्चात वह मर गया"

☞ अब हम पहले संसार के बारे में एक और बात देखते हैं --

2 पतरस 2:4 "क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा,..."

➡ आह! यह स्वर्गदूत कौन है?

➡ ऐसा कहा गया है कि उन्होंने "पाप" किया!! **कैसे**?

आइये हम देखते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

ये सब कुछ **पहले संसार** में हुआ! आइये हम देखें और पढ़ें -

उत्पति 6:1-4 फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न हुईं, तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं; सो उन्होंने जिस जिस को चाहा उन से ब्याह कर लिया। और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लो विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है: उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी। उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए, वे पुत्र शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीन काल से प्रचलित है।

जी हाँ! ये स्वर्गदूत जो कि मानवजाति की मदद करने के लिए आये थे, **शायद** शैतान के बहकावे में आने के कारण वे उसी मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर रहने लगे जो कि उन्हें अपने आप को "प्रगट" करने के लिए दिया गया था और उन्होंने स्त्रीयों से शादी भी कर ली और एक **नई जाति**, जिसे दानव या **नेफिलिम** कहते हैं उत्पन्न की।

ये लोग आधे मनुष्य और आधे स्वर्गदूत थे!! और वे दानव थे!

और ये **स्वर्गदूतों के बच्चे** पृथ्वी को अपने वश में करने लगे और भ्रष्ट करने लगे। उन्होंने मानवजाति को बुराई से इतना ज्यादा प्रभावित कर दिया कि उनके बारे में वचन में कहा जाता है --

उत्पति 6:5 "और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वो निरन्तर बुरा ही होता है।

मानवजाति इन "दानवों" की **गुलाम** बहुत जल्दी से बनने लगे जो की मनुष्य से **श्रेष्ठ** थे और बहुत ज्यादा गिरे हुए थे।
इसलिए **परमेश्वर** ने अपने **ज्ञान** और **प्रेम** में इन सभी चीज़ों को बाढ़ के द्वारा **समाप्त** कर दिया -

ताकि बाढ़ में इनकी मृत्यु तुरन्त और कम दर्द से हो जाए।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इन स्वर्गदूतों ने क्या **"पाप"** किया था?

यहूदा:6 "फिर जो स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उन को भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदा काल के लिये है बन्धनों में रखा है"

जी हाँ! उन्होंने अपने **"स्वर्गदूतों"** वाले स्वभाव को नहीं रखा, बल्कि परमेश्वर की **इच्छा** के **विरुद्ध** पाप किया। उन्होंने मनुष्यों और स्वर्गदूतों के स्वभाव को **मिला** दिया!

लेकिन हम पढ़ते हैं कि बाढ़ के **विनाश** से **केवल** नूहा और उसका परिवार बचा।

उत्पति 6:17,18 "और सुन, मैं आप पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को, जिन में जीवन की आत्मा है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं: और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। परन्तु तेरे संग मैं वाचा बान्धता हूं: इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना"

ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि हम पढ़ते हैं --

उत्पति 6:9 "नूहा की वंशावली यह है। नूहा धर्मी पुरूष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूहा परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा"

इस वचन में "अपने समय के लोगों में खरा था", इस बात का मतलब यह है कि नूहा के वंश में **स्वर्गदूतों** का खून नहीं मिला था, जो कि उस समय के दूसरे परिवारों में होता था।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

नूहा के परिवार के सब लोग **शुद्ध** मनुष्य थे।
इसके अलावा नूहा परमेश्वर का भय मानने वाला मनुष्य था।
अब हम इसके **अलावा** नूहा के बारे में क्या पढ़ते हैं?--

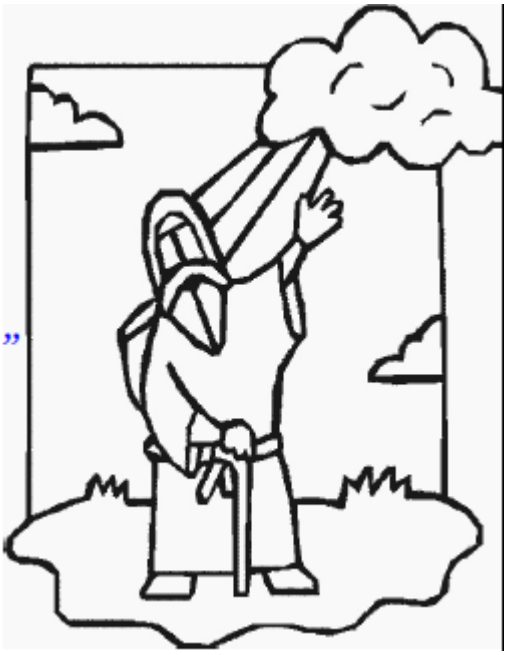

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2 पतरस 2:5 “और प्रथम युग के संसार को भी न छोड़ा, वरन भक्तिहीन संसार पर महा जल-प्रलय भेजकर धर्म के प्रचारक नूहा समेत आठ व्यक्तियों को बचा लिया”

इस वचन का मतलब क्या है?

क्या नूहा एक जगह से दूसरी जगह प्रचार के लिए गया जैसा की हम **"प्रचारक"** शब्द का मतलब समझते हैं?

हकीकत में **प्रचार दो** तरह का होता है।

1) वचनों के द्वारा और **मुँह** से बोलकर किया गया प्रचार।

2) उदाहरण के द्वारा और **क्रियाओं** के साथ किया गया प्रचार।

नूहा ने "धार्मिकता" का प्रचार दूसरे वाले तरीके से किया!
क्योंकि... “क्रियाऐं शब्दों से ज्यादा ऊँचे से बोलती हैं”!

नूहा ने उस **बड़े जहाज** को 120 वर्षों की अवधी में बनाते हुए परमेश्वर के वचनों के प्रति **विश्वास** और **आज्ञापालन** के द्वारा पहले संसार के सामने एक **“बड़ा प्रचार”** किया।

उत्पति 6:22 “परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूहा ने किया”

जब नूहा ने जहाज को बनाना शुरू किया तब यह जहाज के बारे में केवल उसके अपने परिवार **को ही मालूम** था और केवल वे ही इस जहाज को बनते हुए **देख** पा रहे थे। धीरे-धीरे जब जहाज का आकार बड़ा हुआ, वह जहाज उनके पड़ोसियों को भी **दिखने** लगा। उसके बाद जैसे-जैसे और **समय बीतता** गया और जहाज बड़ा हुआ, वह सभी लोगों को जो नूहा के आसपास रहते थे **दिखने** लगा। अन्ततः जब इस **जहाज** का **बनना** पूरा हुआ और एक **विशाल** जहाज बनकर भूमि पर खड़ा हुआ जो वहाँ के **सभी** लोगों को **दिखने** लगा। लोगों ने आकर निश्चय नूहा से इस जहाज के बारे में सवाल किया होगा

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और उनके उत्तर में नूहा ने आनेवाले “बाढ़” और वर्षा के बारे में बताया होगा जिसे सुनकर सब ने नूहा का उपहास किया होगा। लेकिन नूहा ने अपने कार्य को कभी भी नहीं रोका और न ही विश्वास को खोया।

जी हाँ! उसका यह बड़ा परिश्रम सचमुच में उसके द्वारा किया गया "धर्म का प्रचार" था।

और क्या **जहाज** बना था!

उत्पति 6:15 “और इस ढंग से उसको बनाना: जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ की हो”

जहाज की **लम्बाई** तीन सौ हाथ (450 फ़ीट), **चौड़ाई** पचास हाथ (75 फ़ीट), और **ऊंचाई** तीस हाथ (45 फ़ीट) की थी।

ऐसे जहाज को बनाने की कल्पना करें! और वो भी किसी मशीन या आज की तकनीक के बिना और बहुत थोड़े से साधारण औजारों के साथ बनाया जाना!

इसका आकार फुटबॉल के एक बड़े मैदान का डेढ़ गुणा के बराबर था!!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और इसके अलावा पृथ्वी पर कभी भी बारिश नहीं हुई थी!

इसके बारे में हम पढ़ते हैं --

उत्पति 2:5, 6 तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था; तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी।

जी हाँ, बारिश क्या है, ये कोई नहीं जानता था!

पेड़ों की सिचाई **कोहरे** से (**ओस**) होती थी!!

जब नूहा "**बारिश**" के बारे में बोलता था और इतनी बारिश के बारे में जो की पूरी पृथ्वी पर **बाढ़** ला देगी, तब कोई भी नहीं समझ पाता था!

वे नूहा पर हँसते थे और सोचते थे कि नूहा ने अपना मानसिक सन्तुलन खो दिया है!!

लेकिन नूहा ने विश्वास किया और अपने विश्वास को क्रियाओं के द्वारा दिखाया!!

और इस तरह से ऐसे विश्वास के साथ नूहा और उसके 7 जनों का परिवार पहले संसार से दूसरे संसार में गया।

अगले पाठ में हम नूहा से और उसके परिवार से मिलेंगे और ये पढ़ेंगे की बाढ़ के **बाद** दूसरा संसार **कैसे** शुरू हुआ और अभी के मनुष्यजाति के परिवार के लोग **किसके** वंश से हैं!

इस पल के लिए हम नूहा और उसके परिवार को **जहाज** में छोड़ते हैं। जब की बाढ़ ने पृथ्वी पर से **पहले संसार** को पूरी तरह से **भर दिया** और नष्ट कर दिया और जहाँ देखो केवल जल ही जल था!!!

----आमीन---

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com